SWETA DUBEY
ASST.PROFESSOR,
GSCW B.Ed., PEDAGOGY OF SCHOOL SUBJECT
ECONOMICS,SEM-2, PAPER-VII A UNIT-I
TOPIC- CORRELATION OF ECONOMICS WITH OTHER SUBJECT

SUB TOPICE-CORRELATION WITH SOCIOLOGY & HISTORY

PART-III

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सह-सम्बन्ध (Correlation of Economics with other Subjects)

मानवीय व्यवहार एवं क्रियाओं से संबन्धित विभिन्न विषय विकसित हुए हैं । हर विषय की प्रकृति एवं क्षेत्र निश्चित किये गये है । अर्थशास्त्र की सीमायें भी स्पष्ट हैं और इसकी अलग एक व्यवहारिक स्थिति है । इसका अर्थ यह नहीं हैं कि अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता । अर्थशास्त्र का सम्बन्ध मानवीय क्रियाओं के आर्थिक पहलू से है । मानवीय क्रियाओं का यह आर्थिक पहलू अन्य पहलुओं को प्रभावित करता है और उनके द्वारा स्वयं भी प्रभावित होता है । मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करने में लगभग सभी विषयों लाभान्वित हुआ जाता है । अर्थशास्त्र हर विषय से सम्बन्धित उन बातों को महत्ता देता है और अपनाता है जो कि मनुष्य की आर्थिक समस्याओं को हल करने से सम्बन्धित होती है ।

Scanned with CamScanner

कुछ ऐसे विषयों से अर्थशास्त्र को सह-संबन्धित करने की आवश्यकता होती है जो कि तार्किक चिन्तन में सहायक हैं जैसे गणित, सांख्यिकी । कुछ ऐसे विषय हैं जो कि आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण एक-दूसरे अंदाज में करते हैं जैसे समाजशास्त्र, भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र, वाणिज्य जैसे विषय अपने विषय वस्तु की प्रकृति के कारण अर्थशास्त्र से निकटतम रूप से सम्बन्धित हैं । नीचे अर्थशास्त्र के इसी प्रकार के विषयों से सह-सम्बन्ध की विवेचना की जा रही है ।

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र (Economics and Sociology) :

अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र में बडा घनिष्ट सम्बन्ध है । बहुत से विशेषज्ञ अर्थशास्त्र को अलग से एक विषय न मानकर इसे समाज शास्त्र का एक भाग मानते हैं । परन्तु समाज शास्त्र मानवीय जीवन के आर्थिक पहलू का अध्ययन केवल सामान्य रूप में करता है, जबकि अर्थशास्त्र में इस पहलू का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है और इसलिये अर्थशास्त्र की अपनी महत्ता है ।

समाजशास्त्र में मनुष्य के व्यवहार का, समाज के सदस्य होने के नाते, अध्ययन किया जाता है । इस प्रकार से यह सामाजिक संस्थाओं जैसे परिवार, अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म विधि आदि के अध्ययन से सम्बन्धित है और यह समाज की संरचना और प्रक्रियाओं का स्पष्टीकरण करता है ।

Scanned with CamScanner

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र सहित दूसरे सामाजिक शास्त्रों से संबन्धित सामान्य तथ्यों एवं नियमों की जानकारी देता है, इस प्रकार की जानकारी अर्थशास्त्रियों के लिये बड़ी महत्वपूर्ण होती है क्योंकि मानवीय व्यवहार के आर्थिक पहलुओं पर राजनैतिक, धार्मिक, नैतिक और वैधानिक सभी कारकों का प्रभाव पड़ता है । किसी देश की आर्थिक नीति को बनाने एवं समझने के लिये उस देश की सामाजिक दशाओं रीति-रिवाज और परम्पराओं का समझना अति आवश्यक होता है । जाति व्यवस्था, संयुक्त-परिवार प्रथा, धर्म-जनसंख्या का दबाव जैसी सामाजिक घटनाओं का हमारे देश के आर्थिक विकास पर बड़ा प्रभाव पडा है जिसके परिणामस्वरूप हमारे विकास की गति धीमी रही है । अर्थशास्त्र के अध्ययन में आर्थिक क्रियाओं के विकास, व्यवसाय, आर्थिक संगठन के प्रकार, उपभोग, श्रम, जीवन-स्तर, पूंजी, धन का वितरण, आर्थिक विकास, आर्थिक आयोजन, जनसंख्या कुछ ऐसे विशिष्ट प्रकरण हैं जिनके समझने में समाज शास्त्र से बहुत सहायता मिलती है ।

समाज शास्त्र के अध्ययन में भी अर्थशास्त्र का ज्ञान होना अति आवश्यक है क्योंकि आजकल मनुष्य की सभी सामाजिक क्रियाओं पर आर्थिक क्रियाओं का प्रभाव पड़ता है ।

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र और इतिहास (Economics & History) :

इतिहास द्वारा मनुष्य के संघर्षो विभिन्न क्षेत्रों-सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक में हुई उन्नति का विवरण प्राप्त होता है । इतिहास में भूतकालीन आर्थिक प्रयत्नों एवं क्रियाओं का अध्ययन भी किया जाता है । बहुत से अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र के अध्ययन में ऐतिहासिक विषय वस्तु के प्रयोग करने पर बल देते हैं, इसका उदाहरण चिन्तन का ऐतिहासिक स्कूल (Historical School of Thought) है । अर्थशास्त्र के दो प्रमुख पहलू आर्थिक इतिहास एवं आर्थिक विचारों का इतिहास, अर्थशास्त्र की विषय वस्तु का स्पष्टीकरण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से करते हैं । आर्थिक इतिहास द्वारा विभिन्न आर्थिक घटनाओं के कारण एवं परिणामों की जानकारी मिलती है और आर्थिक नियमों के निर्माण एवं विवेचन में सहायता मिलती है । भूतकालीन घटनाओं की जानकारी द्वारा वर्तमान आर्थिक पहलुओं के अध्ययन एवं नीतियों के

Scanned with CamScanner

निर्धारण में आसानी हो जाती है । और कभी-कभी भविष्य में होने वाली प्रवृत्तियों का भी अन्दाज लगाया जा सकता है ।

इसी प्रकार आर्थिक विचारों के इतिहास द्वारा पता चलता है कि समाज में हो रहे परिवर्तनों और विकास के साथ-साथ किस प्रकार आर्थिक चिन्तन, सम्प्रत्ययों एवं सिद्धान्तों का पुनरावलोकन किया गया और इसमें परिवर्तन लाये गये ।

Scanned with CamScanner